No. of Printed Pages : 3

एम.एच.डी.-15

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

02001

दिसम्बर, 2018

एम.एच.डी.-15 : हिन्दी उपन्यास-2

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रथम प्रश्न अनिवार्य है । शेष प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

---

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं ***दो*** की संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *2×10=20*

(क) दौलू मामा, तुम लाहौर की कितनी गलियों के कितने बच्चों के मामा थे । तुम उम्र भर रोज़ाना सैकड़ों बच्चों को हँसा-हँसा कर आज उन्हें फूट-फूट कर रोते छोड़ गए हो । इन भोले बच्चों का खिलौना किस ज़ालिम ने छीन लिया ? मामा किसका दुश्मन था ? मामा न यूनियनिस्ट मंत्रिमंडल से मतलब रखता था, न लीग की वज़ारत से । वह तो मानव था, केवल निरीह मानव । उसका ख़ून मानवता का ख़ून है ।

(ख) फरमान अली ने लस्सी का कटोरा ख़ाली कर नीचे रखा और डपटकर कहा, "पूत्तरा, वित्त में रह । काँटों वाले झाड़ी-बूटी के बेर उगाने चला है क्या ! ओ भोलया, शाहों की मलकीयतें लाल बहियों में और हमारी अपने वजूदों में ! शाह जितना हाथ फैलाए सो उसका । जट्ट जितना पसीना बहाए सो उसका ।"

(ग) यह सच है, पर जब पूरी व्यवस्था में बेईमानी है तो एक व्यक्ति की ईमानदारी इसी में है कि वह एक व्यवस्था द्वारा लादी गयी सारी नैतिक विकृति को भी अस्वीकार करे और उसके द्वारा आरोपित सारी झूठी मर्यादाओं को भी, क्योंकि दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू होते हैं । लेकिन हम यह विद्रोह नहीं कर पाते ।

(घ) वैद्यजी को तब बताया गया कि हमें जनता के सामने आदर्श उपस्थित करना चाहिए । ऐसा न हुआ तो जनता का आचरण बिगड़ जाएगा । वह बिगड़ा तो पूरा देश बिगड़ेगा, वर्तमान बिगड़ेगा और भविष्य बिगड़ेगा । राम ने क्या किया था ? सीता का त्याग किया था कि नहीं, तभी हम आज तक रामराज्य को याद करते हैं । त्याग द्वारा भोग करना चाहिए । यही हमारा आदर्श है ।

2. 'झूठा-सच' के प्रमुख स्त्री-पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए । *10*

3. 'ज़िन्दगीनामा' के भाषिक सौंदर्य और शैलीगत वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए । *10*

4. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' में व्यक्त लेखकीय दृष्टि का विवेचन कीजिए । *10*

5. 'राग दरबारी' में अभिव्यक्त सामाजिक यथार्थ के महत्त्व और प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए । *10*

6. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×5=10*

   (क) 'झूठा सच' का निहितार्थ

   (ख) 'ज़िन्दगीनामा' में लोक जीवन

   (ग) माणिक मुल्ला

   (घ) 'राग दरबारी' में व्यंग्य